

RANCHI, FRIDAY, 29/03/2019

आर्यभट्ट सभागार में शुरू हुआ आईजीएनसीए और रांची विवि का नॉर्थ-ईस्ट आउटरीच प्रोग्राम।

रांची में दिख रही है उत्तर-पूर्वी भारत की संस्कृतियों की झलक



धूंधलों की झँकार से गुंजा सभागार

कर्णकम की शूरुआत समेत सेनगुप्त के ओडिसी नृत्य से हुई। जिसमें पारंपरिक वाला यंत्रों की शुरू पर पैरों में बंधे धूंधलों की झँकार नृत्य की हर ताल को बख्ती मिल रहे थे। इसमें उन्होंने ओडिसी डास के कई पौराचर और हव्व-भाव को प्रदर्शित किया और दर्शकों की सुन्दरीय बटोरी।

फिल्म रिपोर्टर | नवी

आर्यभट्ट सभागार में मुख्यर को उत्तर-पूर्वी की कला और संस्कृति का दर्शन हुआ। जिसमें उत्तर-पूर्व में आए कलाकारों ने पारंपरिक वाला यंत्रों के माध्यम से और ताल का वेहतरीन तालमेल प्रस्तुत किया। मीका चा इदिता गोपी राधीय कला केन्द्र (राधीय साक्षा गोपी), गुरुचंद्र विश्वविद्यालय और अष्टाजीएसीए नवीं ईस्ट रीजिनल सेंटर गुवाहाटी की ओर से आयोजित कलाकारम 'आउटरीच - पेट्रोल कलाचर ऑफ नवीं ईस्ट' का। यह 30 अप्रैल 30 मार्च तक चलेगा। गुरुचंद्र में हर दिन उत्तर-पूर्वी भारत की ममूद परंपरा की अलग-अलग झलक दिखाई देगी। असम और मणिपुर के 20 कलाकार जीवन प्रस्तुतियों देंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के

रूप में डॉ. रघुमाम प्रभाद मुख्यमंत्री किंविक्षियालय के कुलपति डॉ. एम्बर मुंदा, पदाधी मुमुक्षु नायक, उप सचिव आईजीएनसीए बीबी शम्मी, द्वेरीय निदेशक उत्तर पूर्व बोर्ड केन्द्र डॉ. बृहन नेही, द्वेरीय निदेशक द्वेरीय केन्द्र राज्य डॉ. अजय कुमार मिश्र, कमल कुमार बोस, अंजनी कुमार मिन्हा उपरिक्षेत्र रहे। मुख्य अतिथि ने अपने मंवोधन में कहा कि भौगोलिक आकृति के अनुसार संस्कृति की शुरू हुई है। हमें चिंतन कर कर्मजीक कमिसों की दूर करने का प्रयत्न करना होगा। वहीं पदाधी मुमुक्षु नायक ने कहा कि अग्री बढ़े लक्षित मानवाभाषा, परंपरा, पर्व त्वाहूर को कभी न भूलें। पुरुषों की बनाई परंपराओं का मंरण भी ज़रूरी है। इस अवसर पर मैकड़ी स्ट्रॉबेरी और दशक मौजूद रहे।

असम की 14वीं सदी की सत्रिया परंपरा



आज मणिपुर की रासलीला

अस्ट्रेलिय कर्कितम के रहना भुख्यार को आर्यभट्ट सभागार में मणिपुर की रासलीला की प्रस्तुति होती। फिर अंगिन विव, याली लविकर को अलम के नवीं अत्योगी का प्रस्तुति होता। ये कर्कितम बोह्य 2.30 बजे से शुरू होते। यह कर्कितम के रिए प्रेत विभुक्त है।

दैनिक
का है
डांस, सि

मणिपुर
मणिपुर

दैनिक भारत
मणिपुरा टैक्स
रहा है। कर्कित
रोड स्थित द
में शुरू होगा
होगा। यह इसमें
सिंगिया
योट्टी में अ
मदम्बों द्वारा
की जाएगी।
यह ही हर त्रे
किया जाएगा।
रुजिस्ट्रेशन
लकड़ियों
रुजिस्ट्रेशन
भाग ले मकान
3 बजे तक
अपना रजिस्ट्रेशन

9वीं से
है सीबी

मैरीजाएं क
के लिए बुला
रहा है। स्ट्रॉबे
लालिंग टूर के
ठारेश्वर में या
काश है। यह इ
पद्धति के लिए
क्लास, मल्जे
यांकों के क्लै

आर्यभट्ट सभागार में तीन दिवसीय कार्यक्रम की शुरुआत, असम और मणिपुर से आए हैं कलाकार

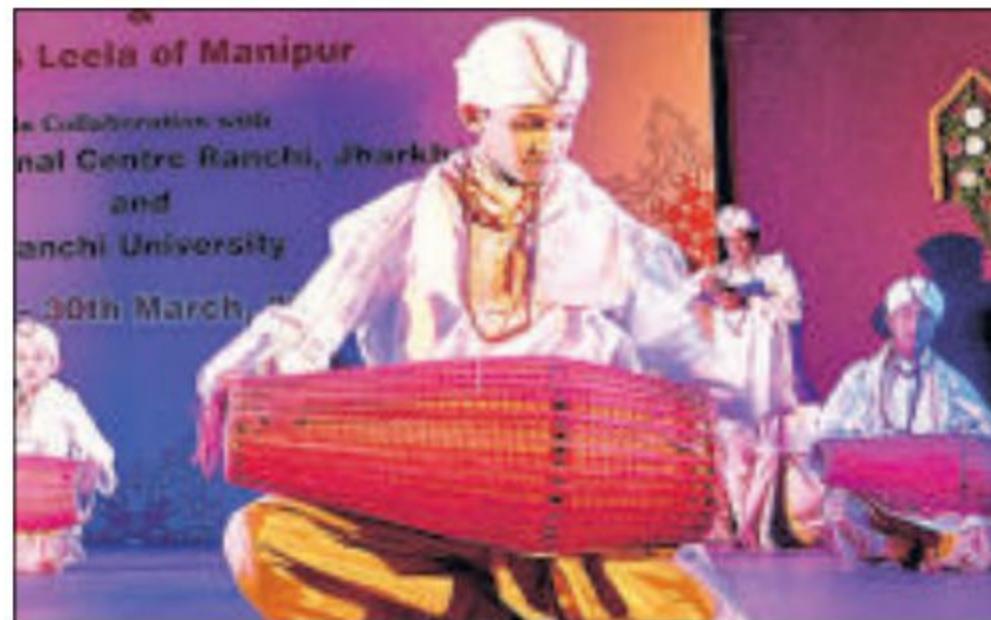
अनूठी प्रस्तुतियों से जीवंत हुई उत्तर-पूर्व की संस्कृति

रंची | संवाददाता

इंदिरा गांधी कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा रांची, रांची विश्वविद्यालय व नॉर्थ ईस्ट क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के सहयोग से उत्तर पूर्व संस्कृति पर आधारित आउटरीच कार्यक्रम की शुरुआत गुरुवार को हुई। आर्यभट्ट सभागार में कार्यक्रम का उद्घाटन

डीएसपीएमयू के कुलपति डॉ एसएन मुंडा, पद्मश्री मुकुंद नायक, बीबी शर्मा, डॉ ऋचा नेगी और डॉ अजय कुमार मिश्रा ने किया। उत्तर पूर्व की परंपरा को संबृद्ध करने के लिए कार्यक्रम में असम और मणिपुर के 20 कलाकार भाग ले रहे हैं।

कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा अंतर क्षेत्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने और विभिन्न क्षेत्रों की कला रूपों को लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्र द्वारा शृंखला आयोजित



गुरुवार को आर्यभट्ट सभागार में उत्तर-पूर्व के कलाकारों ने नृत्य-संगीत की प्रस्तुति देकर अपनी संस्कृति से परिचय कराया।

करने की बात की। डॉ ऋचा नेगी ने आउटरीच शृंखला के महत्व को समझाया। उन्होंने क्रमशः असम और मणिपुर की कलाकृतियों के बारे में विस्तार से बताया, जो अगले तीन दिन कार्यक्रम के दौरान मंचन किया जाएगा।

ओडिशी से शुरुआत :

सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत सुमेधा सेनगुप्ता के ओडिशी नृत्य से हुई। उन्होंने गुरु कैलुचरण महापात्रा द्वारा अर्द्धनारीश्वर रूप को मंच पर जीवंत किया। इसमें हिंदू देवी-देवताओं और पार्वती के संयुक्त और

कामुक रूप का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के दूसरे और तीसरे दिन में मणिपुर की रासलीला और असम की माटी अखोरा का प्रदर्शन होगा। कार्यक्रम का संचालन कमल कुमार बोस ने किया। अंजनी कुमार सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आर्यभट्ट सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू

परंपरागत भारतीय संस्कृति में छिपा है जीवन : डॉ सत्यनारायण

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स नॉर्थ ईस्ट रीजनल सेंटर गुवाहाटी की ओर से आर्यभट्ट सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में असम की सत्रिया गायन-वादन और मणिपुर की रास लीला प्रस्तुत की जायेगी। इसका उद्घाटन गुरुवार को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ सत्यनारायण मुंडा ने किया।

मौके पर उन्होंने कहा कि परंपरागत भारत को बचाने की जरूरत है। इसी में आजीविका और जीवन दोनों हैं। उन्होंने कहा कि परंपरागत भारतीय संस्कृति में प्रकृति सुरक्षित रहती है। इसलिए संस्कृति और कला के माध्यम से लोगों के मन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की जरूरत है।

पद्मश्री मुकुंद नायक ने कहा कि अपनी भाषा-संस्कृति को कभी नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि असम में रह रहे झारखड के आदिवासियों और सदानों की संस्कृति को भी सुरक्षित रखने की जरूरत है। नॉर्थ ईस्ट रीजनल सेंटर गुवाहाटी की डॉ त्रिश्चा नेगी ने कहा कि पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति से अवगत कराने के लिए रांची में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। आज भी लोग उत्तर भारत की कई संस्कृतियों से अवगत नहीं हैं। रांची रीजन के निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्र ने अतिथियों का स्वागत किया। अंजनी कुमरा सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। यह कार्यक्रम 30 अप्रैल तक चलेगा।



सत्रिया गायन-वादन ने मोहा मन

असम की टीम ने आकर्षण सत्रिया गायन-वादन कर उपस्थित लोगों का मन जीत लिया। छोटे-छोटे बच्चों ने आकर्षण प्रस्तुति दी। उनके साथ बड़े भी कार्यक्रम में शामिल थे। सत्रिया डांस 15वीं सदी में प्रारंभ हुआ था। यह भक्ति नृत्य है। जिसमें वैष्णव भक्ति का प्रभाव है। इस नृत्य को मठ के अधिकारी से सीखते हैं।



Outreach: Portraying culture of North East at IGNCA

DIVYA MODI ■ RANCHI

The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), Regional Centre Ranchi in collaboration with the IGNCA North East Regional Centre Guwahati is organizing a three day event 'Outreach: Portraying Culture of North East' through the performance of Sattriya Dance Tradition of Assam and Raasleela of Manipur at Ranchi University. The event began today and will continue till March 30 at the Aryabhatta Auditorium, Ranchi University Campus.

Chief guest Dr. SN Munda, Vice Chancellor, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Guest of Honour Padma Awardee Mukund Nayak, B. B. Sharma, Deputy Secretary (Academic) IGNCA, Dr. Richa Nehi, Regional Director, IGNCA North East Regional Centre and Dr. Ajay Kumar Mishra, Regional Director, Regional Centre Ranchi were present for the inauguration ceremony. A total of 22 artists from the north east states of Assam and Manipur will be performing.

Mishra facilitated the



An artist performs cultural programme at the inaugural ceremony of 'Outreach: Portraying Culture of North East' in Ranchi on Thursday

PNS

guests and spoke about the endeavor of IGNCA Regional Centres in organising a series of outreach programs to encourage inter-religion cultural exchange and popularizing the art forms of various regions.

Nehi explained the importance of the outreach series and elaborated about the Sattriya and Manipuri artisans of Assam and Manipur respectively. Munda and Nayak expressed their pleasure on being a part of this venture and extended their best wishes to the IGNCA Regional Centres.

The programme began

with an inaugural Odissi Dance by Sumedha Sengupta, who performed 'Ardhanariswar' choreographed by Guru Kelucharan Mahapatra, where a composite androgynous form of the Hindu deities Shiva and Parvati was showcased. Ardhanarishvara was depicted as half-male and half-female, equally split down the middle. The right half illustrating the male and his traditional attributes.

This was followed by Gayan Bayan- a form of Sattriya tradition of Assam. The Sattriya tradition consists of a group of Bhagats disciples in Satras.

This tradition was introduced by Srimanta Sankardev, Saint and reformist in the 14th- 15th century as a part of the Vaishnava Bhakti Movement. Over the years, it has been developed and evolved by the Sattradhikars who are the head monks or gurus of the satras which are the mathas or monasteries where the tradition is preached and propagated. Gayan bayan is a portrayal of the Sattriya tradition which is a part of the Anika- Nat or one act play where music, dance and drama are interrelated. The oral rendition is known as gayan where as the instrumental part is called bayan and is usually performed to praise Sankardev and Madhabdev- his close disciple.

The second and third day of the program will have the Raasleela of Manipur and Mati Akhora of Assam. The audience was mesmerized by the vibrant performance while the artists expressed their joy of being able to perform in the capital.

Towards the end, the anchor Anjani Kumar Sinha thanked the esteemed guests and the viewers for their presence.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

North East Regional Centre, Guwahati

Presents

"Outreach : Portraying Culture of North East"

Sattriya Dance Tradition of Assam

&
Raas Lila of Manipur

IGNCA - Re

Ranchi, Jharkhand

28th - 2019



Children from the Northeast perform a traditional dance at Aryabhatta Auditorium at Morabadi in Ranchi on Thursday. The performance was part of a three-day programme to showcase culture of the Northeast, primarily Assam and Manipur, organised by Indira Gandhi National Centre For Art and North East Regional Centre, Guwahati, in collaboration with Ranchi University. Picture by Prashant Mitra

लोक संस्कृति का नृत्य

जर्नलिज्म जिंदगी का

संचार, शुक्रवार

29.03.2019

आर्यभट्ट सभागार. कलाकारों ने नृत्य से मन मोहा

नृत्य में दिखी उत्तर-पूर्वी संस्कृति की खूबसूरती

लाइफ रिपोर्टर @ संचार

राजधानी में उत्तर-पूर्व की संस्कृति का बेजोड़ संगम दिखा, कलाकारों ने अपने खूबसूरत नृत्य से पूर्वोत्तर की संस्कृति की सुंदरता को बखूबी दर्शाया। पारंपरिक कला बिखेरी और राजधानीवासियों को पूर्वोत्तर संस्कृति की खूबियों से अवगत कराया। असम की सचित्र नृत्य परंपरा और मणिपुर की रासलीला का जीवंत प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत असम और मणिपुर के कलाकारों ने की। अवसर था आर्यभट्ट सभागार में गुरुवार को उत्तर-पूर्व की संस्कृति पर आधारित नृत्य कार्यक्रम का। यह आयोजन ईंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा, रांची विवि और नॉर्थ इस्ट रीजनल सेंटर गुवाहाटी के सहयोग से किया गया है। यह कार्यक्रम तीन दिनों तक चलेगा।



आर्यभट्ट सभागार में आयोजित कार्यक्रम में शामिल पद्मश्री मुकुंद नायक और अन्य।

अपनी संस्कृति न भूलें युवा, इसी से जुड़ी है हमारी पहचान

विशिष्ट अतिथि पद्मश्री मुकुंद नायक ने कहा कि युवा शक्ति राष्ट्र शक्ति है। आज हमारा देश तेजी से विकास कर रहा है। हालांकि इस दौरान संस्कृति का क्षरण भी हो रहा है। इसलिए युवा अपनी संस्कृति को कभी न भूलें। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि संस्कृति जड़ है, इसी से हमारी पहचान जुड़ गयी है।

मणिपुर, असम के नृत्य की बेजोड़ प्रस्तुति

कार्यक्रम की शुरुआत में असम की सचित्र परंपरा की खूबसूरत झलक दिखी। इस शास्त्रीय परंपरा में भगत शिष्यों का समूह शामिल है। ज्ञान बान शास्त्रीय परंपरा का खूबसूरत तरीके से पारंपरिक वित्रण किया गया। इसमें संगीत, नृत्य और नाटक परस्पर जुड़े होते हैं। पहले कार्यक्रम में नौ से 11 वर्ष के बच्चों ने गुरुकुल परंपरा को बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत किया। असम की लोक कला को दर्शाया। इसके बाद रेणु ने मणिपुर के दशावतर नृत्य का बेजोड़ प्रदर्शन किया। असम के शास्त्रीय नृत्य को गायत्री, दिशा, मीसमी और निकोमणि ने प्रस्तुत किया। अंत में एल विध्येश्वरी ने ज्योति संवाद में सखी नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी।

हर जगह की संस्कृति भिन्न, इसे बचाना जरूरी

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के वीरी डॉ एनएन मुंडा ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम में कल्पना के माध्यम से परिवर्तन का बीड़ा उठाया गया है। हर जगह की अलग-अलग संस्कृति है। इसे बचाने की जरूरत है। अब लोगों को नये ढंग से सोचने की जरूरत है। शिक्षा हो या संस्कृति इसके लिए लोगों को जागरूक करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि संस्कृति के माध्यम से लोगों के हाव-भाव में बदलाव लाने की भी जरूरत है।

ये थे मौजूद

इस अवसर पर आईजीएनसीए के उप सचिव बीबी शर्मा, आईजीएनसीए उत्तर पूर्व क्षेत्रीय केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक डॉ ऋचा नेगी, क्षेत्रीय केंद्र रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा, अंजनी कुमार सहित अन्य अतिथि मौजूद थे। इस दौरान कार्यक्रम का संचालन कमल कुमार बोस ने किया।

आज का कार्यक्रम

तीन दिवसीय कार्यक्रम में शुक्रवार को मणिपुर की रासलीला और असम की माटी अखोरा का प्रदर्शन होगा।



आर्यभट्ट सभागार में नृत्य की प्रस्तुति देती कलाकार

आड़े हाउस

मंच ने है
व्यवस्था



रिटर्न ऑफ एकलाव्य
व्यवस्था पर करता है

साहित्य अकादमी

सम्मानित कथाकार

रजाक की मूल कथा

नाटक रिटर्न ऑफ

बेहतरीन नाटक है। जो

कथानक से प्रारंभ होता

समाज की व्यवस्था पर

है। असलम परवेज के नाटक

और शाकिर तसनीम के निर्देश

यह नाटक एकलाव्य की जिंदगी

हुए प्रारंभ होता है। यह नाटक

द्रोण की मूलाकात और एकलाव्य

नहीं सीख पाने कारणों को दिखा

के आधुनिक समय में प्रवेश करना

समाज में मौजूद आरक्षण, जात-

बोजगारी जैसे ज्वलत मुद्दों पर

है। इसमें एकलाव्य वर्तमान समझ

छात्र का प्रतिनिधित्व कर रहा

आर्थिक अभाव के कारण अपने स

नहीं कर पाता है। मंचन के दौरान

शाकिर तसनीम ने प्रारंभ से ही दश

रखा, वहीं कलाइमेक्स को बेहद

से रंगमंचीयोंता



रांची। डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी दिए गए अध्यर्थियों का साक्षात्कार 29 अपने सभी मूल प्रमाण पत्र एवं छाया साक्षात्कार के लिए उपस्थित रहें।

राजधानी

आईजीएनसीए के तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ

देश की कलाकृतियों एवं संस्कृति से रूबरू हुए लोग



रांची। इंदिया गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) क्षेत्रीय शाखा रांची, रांची विश्वविद्यालय एवं नैर्थ ईस्ट रीजनल सेंटर, गुवाहाटी के सहयोग से 28 से 30 मार्च तक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन आज आरंभट आँडिटोरियम, रांची विश्वविद्यालय, मोराबादी, रांची में किया गया, यह अतिथियों को डा. अजय कुमार

मिश्रा, डा.ऋचा नेगी और बी.बी. शर्मा द्वारा सम्मानित किया गया। डा. मिश्रा ने इस अवसर पर सभी अतिथियों, कलाकारों, मीडिया और दर्शकों का स्वागत किया। उन्होंने अंतर-क्षेत्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने और विभिन्न क्षेत्रों के कला रूपों को लोकप्रिय बनाने के लिए आईजीएनसीए क्षेत्रीय केंद्रों के प्रयासों की एक श्रृंखला आयोजित करने के बारे में भी बात की। डा. ऋचा नेगी ने आउटरीच श्रृंखला के महत्व को समझाया और उन्होंने क्रमशः असम और मणिपुर के सत्रिया और मणिपुरी कलाकृतियों के बारे में भी विस्तार से बताया जो तीन दिनों के कार्यक्रम के

दौरान मंचन किया जाएगा। डा.एस. एन. मुंडा और पद्मश्री मुकुंद नायक ने उद्घाटन का हिस्सा बनने के लिए बहुत खुशी व्यक्त की और कार्यक्रम की सफलता के लिए कलाकारों और आईजीएनसीए क्षेत्रीय केंद्रों को शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम की शुरुआत सुमेधा सेनगुप्ता के उद्घाटन ओडिसी नृत्य प्रदर्शन के साथ हुई, जो आईजीएनसीए आरसीआर में कार्यक्रम सहायक के रूप में भी काम करती है। उन्होंने गुरु केलुचरण महापात्र द्वारा अर्धनारीश्वर की कोरियोग्राफी की, जिसमें हिंदू देवी-देवताओं और पार्वती के संयुक्त और कामुक रूप का प्रदर्शन किया गया था। उद्घाटन प्रदर्शन के बाद गवन व्यान - असम की सत्रिय परंपरा का एक रूप था। सत्रिय परंपरा में सत्त्वों में भगत शिष्यों का एक समूह शामिल है। श्रीमंत शंकरदेव, संत और सुधारवादी द्वारा 14 वीं - 15 वीं शताब्दी में वैष्णव भक्ति आंदोलन के हिस्से के रूप में सत्रिय परंपरा की शुरुआत की गई थी। वर्षों से यह क्षत्रियों के मठों या मठों के विकसित हुआ, जिन्होंने इस परंपरा का प्रचार और प्रसार

किया। गवन बान सत्रिया परंपरा का एक परंपरिक चित्रण है जो अंकिया का हिस्सा है- नट या एक नाटक जिसमें संगीत, नृत्य और नाटक परस्पर जुड़े होते हैं। मौखिक प्रतिपादन को गान के रूप में जाना जाता है और बाद भाग को बयन कहा जाता है। गवन बान आमतौर पर उनके करीबी शिष्य शंकरदेव और माधवदेव की प्रशंसा में की जाती है। इस तरह के जीवंत प्रदर्शनों को देखने के लिए लोगों में काफी उत्साह दिख पड़ा। नैर्थ ईस्ट इंडिया के प्रतिभाशाली कलाकारों ने भी रांची में अपने प्रदर्शन को मीचित करने में सक्षम होने के लिए खुशी व्यक्त की, जहां दर्शक बहुत उत्साहजनक और सहायक हैं। आउटरीच कार्यक्रम के दूसरे और तीसरे दिन में मणिपुर के रासलीला और असम के माटी अखोरा के प्रदर्शन शामिल होंगे। कार्यक्रम का संचालन कमल कुमार बोस ने किया। प्रदर्शनों के बाद, अंजनी कुमार सिन्हा ने इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों, विशिष्ट अतिथियों और सभी को इस कार्यक्रम के सफल होने के लिए धन्यवाद दिया।